

《民國園藝史料匯編》編委會編

民國園藝史料匯編

6

第1輯

江苏人民出版社

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476	477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500	501	502	503	504	505	506	507	508	509	510	511	512	513	514	515	516	517	518	519	520	521	522	523	524	525	526	527	528	529	530	531	532	533	534	535	536	537	538	539	540	541	542	543	544	545	546	547	548	549	550	551	552	553	554	555	556	557	558	559	560	561	562	563	564	565	566	567	568	569	570	571	572	573	574	575	576	577	578	579	580	581	582	583	584	585	586	587	588	589	590	591	592	593	594	595	596	597	598	599	600	601	602	603	604	605	606	607	608	609	610	611	612	613	614	615	616	617	618	619	620	621	622	623	624	625	626	627	628	629	630	631	632	633	634	635	636	637	638	639	640	641	642	643	644	645	646	647	648	649	650	651	652	653	654	655	656	657	658	659	660	661	662	663	664	665	666	667	668	669	670	671	672	673	674	675	676	677	678	679	680	681	682	683	684	685	686	687	688	689	690	691	692	693	694	695	696	697	698	699	700	701	702	703	704	705	706	707	708	709	710	711	712	713	714	715	716	717	718	719	720	721	722	723	724	725	726	727	728	729	730	731	732	733	734	735	736	737	738	739	740	741	742	743	744	745	746	747	748	749	750	751	752	753	754	755	756	757	758	759	760	761	762	763	764	765	766	767	768	769	770	771	772	773	774	775	776	777	778	779	780	781	782	783	784	785	786	787	788	789	790	791	792	793	794	795	796	797	798	799	800	801	802	803	804	805	806	807	808	809	810	811	812	813	814	815	816	817	818	819	820	821	822	823	824	825	826	827	828	829	830	831	832	833	834	835	836	837	838	839	840	841	842	843	844	845	846	847	848	849	850	851	852	853	854	855	856	857	858	859	860	861	862	863	864	865	866	867	868	869	870	871	872	873	874	875	876	877	878	879	880	881	882	883	884	885	886	887	888	889	890	891	892	893	894	895	896	897	898	899	900	901	902	903	904	905	906	907	908	909	910	911	912	913	914	915	916	917	918	919	920	921	922	923	924	925	926	927	928	929	930	931	932	933	934	935	936	937	938	939	940	941	942	943	944	945	946	947	948	949	950	951	952	953	954	955	956	957	958	959	960	961	962	963	964	965	966	967	968	969	970	971	972	973	974	975	976	977	978	979	980	981	982	983	984	985	986	987	988	989	990	991	992	993	994	995	996	997	998	999	1000	1001	1002	1003	1004	1005	1006	1007	1008	1009	1010	1011	1012	1013	1014	1015	1016	1017	1018	1019	1020	1021	1022	1023	1024	1025	1026	1027	1028	1029	1030	1031	1032	1033	1034	1035	1036	1037	1038	1039	1040	1041	1042	1043	1044	1045	1046	1047	1048	1049	1050	1051	1052	1053	1054	1055	1056	1057	1058	1059	1060	1061	1062	1063	1064	1065	1066	1067	1068	1069	1070	1071	1072	1073	1074	1075	1076	1077	1078	1079	1080	1081	1082	1083	1084	1085	1086	1087	1088	1089	1090	1091	1092	1093	1094	1095	1096	1097	1098	1099	1100	1101	1102	1103	1104	1105	1106	1107	1108	1109	1110	1111	1112	1113	1114	1115	1116	1117	1118	1119	1120	1121	1122	1123	1124	1125	1126	1127	1128	1129	1130	1131	1132	1133	1134	1135	1136	1137	1138	1139	1140	1141	1142	1143	1144	1145	1146	1147	1148	1149	1150	1151	1152	1153	1154	1155	1156	1157	1158	1159	1160	1161	1162	1163	1164	1165	1166	1167	1168	1169	1170	1171	1172	1173	1174	1175	1176	1177	1178	1179	1180	1181	1182	1183	1184	1185	1186	1187	1188	1189	1190	1191	1192	1193	1194	1195	1196	1197	1198	1199	1200	1201	1202	1203	1204	1205	1206	1207	1208	1209	1210	1211	1212	1213	1214	1215	1216	1217	1218	1219	1220	1221	1222	1223	1224	1225	1226	1227	1228	1229	1230	1231	1232	1233	1234	1235	1236	1237	1238	1239	1240	1241	1242	1243	1244	1245	1246	1247	1248	1249	1250	1251	1252	1253	1254	1255	1256	1257	1258	1259	1260	1261	1262	1263	1264	1265	1266	1267	1268	1269	1270	1271	1272	1273	1274	1275	1276	1277	1278	1279	1280	1281	1282	1283	1284	1285	1286	1287	1288	1289	1290	1291	1292	1293	1294	1295	1296	1297	1298	1299	1300	1301	1302	1303	1304	1305	1306	1307	1308	1309	1310	1311	1312	1313	1314	1315	1316	1317	1318	1319	1320	1321	1322	1323	1324	1325	1326	1327	1328	1329	1330	1331	1332	1333	1334	1335	1336	1337	1338	1339	1340	1341	1342	1343	1344	1345	1346	1347	1348	1349	1350	1351	1352	1353	1354	1355	1356	1357	1358	1359	1360	1361	1362	1363	1364	1365	1366	1367	1368	1369	1370	1371	1372	1373	1374	1375	1376	1377	1378	1379	1380	1381	1382	1383	1384	1385	1386	1387	1388	1389	1390	1391	1392	1393	1394	1395	1396	1397	1398	1399	1400	1401	1402	1403	1404	1405	1406	1407	1408	1409	1410	1411	1412	1413	1414	1415	1416	1417	1418	1419	1420	1421	1422	1423	1424	1425	1426	1427	1428	1429	1430	1431	1432	1433	1434	1435	1436	1437	1438	1439	1440	1441	1442	1443	1444	1445	1446	1447	1448	1449	1450	1451	1452	1453	1454	1455	1456	1457	1458	1459	1460	1461	1462	1463	1464	1465	1466	1467	1468	1469	1470	1471	1472	1473	1474	1475	1476	1477	1478	1479	1480	1481	1482	1483	1484	1485	1486	1487	1488	1489	1490	1491	1492	1493	1494	1495	1
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	---

《民國園藝史料匯編》編委會編

第1輯

民國園藝史料匯編 6



江蘇人民出版社

第六冊

花草竹木 楊蔭深 編著 世界書局 民國三十五年 一

果樹學汎論 胡昌熾 編著 中華書局 民國三十年 九一

果樹 〔目〕 田中長三郎 著 賈祖璋 譯 商務印書館 三六五

花 草 竹 木

楊蔭深 編著

世界書局

民國三十五年

書叢故掌物事常日

木竹草花

著編深蔭楊

行印局書界世

日常事物掌故叢書總序

我們日常生活之中，所見所聞的事物，真是至繁且夥，不勝枚舉。就這許多事物裏面，除了一小部分是最近所發明或產生者外，大部分可說古已有了的。可是人們多不注意，這大部分事物是怎樣來的？而且自古至今，~~一定經過~~許多變遷，這變遷又是怎樣的？大家差不多都安之若素，不想追究的了。是的，這許多事物，定要一一追究其來源對於我們經濟又有什麼關係呢？佳節到了，就是佳節。神仙鬼怪，有許多人還要迷信着，有許多人已經不迷信了，信也好，不信也罷，究竟何必再去追究牠呢？至如我們的衣食住行，以及禽獸草木之類，有許多人正在研究作爲專門的學問了，也何必再去追究牠的來源呢？

說這樣話的人一定很多。尤其是科學落後的我國，過去有許多記載都是靠不住的，如禽獸草木之類，非根據現在新的研究方法不可，若仍迷戀於古人的記載，錯誤一定是很多的。至於其他的事物，現在也正在改進之中，舊的已廢棄了，新的正不絕地在產生，我們只有向前研究，爲什麼還要回來開倒車呢？

可是儘管有人對我這樣說，我總覺前人的記載還是值得我們現在去留戀的。尤其是我們中國人更應愛護中國過去的文化。錯誤的正可把牠改正，不錯誤的當然要把牠更發揚出來，使知前人研究也並非完全是不對的。我因爲自己有歷史癖，明知道有許多是附會依托的，卻也喜把牠摘錄下來，作爲古人對於某事某物的一種說法，因爲隨時的摘錄既多，便想把他整理出來，這就是我編寫這部「日常事物掌故叢書」的一個小小動機。

提起掌故，好像就是軍國大事，典章制度的故實了。但是我現在所說的，卻是一些日常的事物，這裏只是人人日常所接觸的事物，沒有一件是國家宏制偉典的。原來掌故只是故事而已，所以日常事物也未始無故事可言，只因中國舊有掌故之說，所以我也把牠移來用了。這是我定名為「日常事物掌故叢書」的一些簡單意義。

上面已經說過，日常事物是至繁且夥的，我要把牠一一說盡，當然事實上是不可可能的。所以我所編寫的，是日常事物中最主要的一部分。歲時令節是我們每年每月所要遇到的，所以我把牠來編寫。神仙鬼怪有許多人在正還迷信着，可是牠們最初究竟怎樣的，說明了也就平凡極了，所以也列為一門。至於我們日常所必需的衣食住行，以及日常所見到的禽獸草木之類，自然也有一談的價值。大約每種都想談牠一二十種，每種也並不想詳加考據，只是隨便舉證，作為已往是怎樣的，現今又是怎樣的，給讀者一個原委而已。這部小叢書是想給讀者一個常識看的，不想求其深奧，而且還想求其生趣，所以其中頗採了不少有趣味性的故事，以供讀者茶餘酒後的談助。這是「日常事物掌故叢書」的一些內容大略。

本叢書範圍很廣，各方面簡直都有。我自問無此博識，可以勝任愉快。只是本叢書並非專門研究，僅將前人載籍所記錄的，作一番轉述而已，所以門類雖廣，我尚能勉與應付。不過錯誤之處，仍所難免，是在讀者的指正了。又本叢書每冊或有附錄，大率為行文方面便利起見，未能在正文詳述的，就在附錄裏錄及；同時因為有許多資料，正可作正文的對證和參考，所以也把牠附在最後了。

最後，我要十二分感謝陸高誼先生，鼓勵我寫成這一部小叢書，得以順利地在世界書局出版，使與讀者相見。否則我無此鼓勵，恐怕永遠不會寫成這部小叢書的。

楊蔭深三十四年二月四日

序

花草竹木，種類之多，真是不勝枚舉。本書非植物全書，自然不能盡述；所述者，不過日常所見而已。然而各地風土不同，或在南方爲常見而在北方則少有，或爲北方所習聞而爲南方所未知，這種惟有採取折衷辦法，約略分述。又如關於果木之類，其花其木，亦有可採，祇以本書另有穀蔬瓜果，在那裏已經敘述的，在這裏便不再重錄，故如梅杏桃李，石榴芙蓉等，其花皆爲前人所稱賞，這裏皆未曾提及，閱者鑒之！

以言花草竹木的掌故，亦惟略述此諸植物的由來而已。本書明非植物學或園藝造林學之類，故於形態栽培，不能詳述，其性質一如本書的穀蔬瓜果。大抵穀蔬瓜果專載吾人日常所食的植物，本書則專重於觀賞及實用的植物，雖間有數種亦可供食，然其重要部分還在於觀賞及實用。藥草一項，雖亦爲吾人日常所見植物，究係性質特殊，且學涉專門，故本書概未敘述，僅芝參一類，以向來認爲仙物神品，略加談及。本書內容，大抵如此，掛一漏萬，自知不免，幸閱者教正，不勝感甚！

中華民國三十四年四月八日楊蔭深

目次

一	牡丹芍藥	一
二	蠟梅水仙	七
三	辛夷玉蘭	九
四	薔薇玫瑰	一一
五	海棠茉莉	一四
六	鳳仙雞冠	一六
七	木犀芙蓉	一八
八	蘭蕙菊華	二二
九	菖蒲蓍艾	二九
一〇	靈芝人參	三三
一一	蘆荻	三六
一二	麻棉	三九
一三	竹類	四三

一四	松柏	四八
一五	樟楠	五五
一六	椿樗	五七
一七	槐楓	五九
一八	桐漆	六三
一九	楊柳	六八
二〇	桑柘	七一
二一	櫻櫚	七四
二二	荆棘	七五

花草竹木

一 牡丹芍藥

牡丹向稱爲花王，然其花於古未聞，六朝時亦極少見，至唐宋始爲人所推崇，如明王象晉羣芳譜云：

牡丹一名「鹿韭」，一名「鼠姑」，一名「百兩金」，一名「木芍藥」。秦漢以前無考，自謝康樂始言永嘉水際竹間多牡丹，而劉賓客嘉話錄謂北齊楊子華有畫牡丹，則此花之從來舊矣。唐開元中，天下太平，牡丹始盛於長安。逮宋惟洛陽之花爲天下冠，一時名人高士如邵康節范堯夫司馬君實歐陽永叔諸公，尤加崇尚，往往見之詠歌。洛陽之俗，大都好花，閩洛陽風土記可考鏡也。

然牡丹實爲我國原產，大約古時未加注意，故不見於載籍。至鹿韭鼠姑百兩金之名，均見於本草，未詳其義。牡丹亦不過示其花爲丹色而已，別無意義。至木芍藥據宋鄭樵通志昆蟲草木略云：

古今言木芍藥是牡丹。崔豹古今注云：「芍藥有二種，有草芍藥，有木芍藥。木者花大而色深，俗呼爲牡丹，非也。」安期生服鍊法云：「芍藥有二種，有金芍藥，有木芍藥。金者色白多脂，木者色紫多脈。」此則驗其根也。然牡丹亦有木芍藥之名，其花可愛如芍藥，宿枝如木，故得木芍藥之名。芍藥著於三代之際，風雅之所流詠也。牡丹初無名，故依芍藥以爲名，亦如木芙蓉之依芙蓉以爲名也。牡丹晚出，唐始有聞，貴游趨競，遂使芍藥爲落譜衰宗。

是因其花如芍藥，且爲木本，故得此名。但崔氏以爲與原來的木芍藥不同；鄭氏却疑古所謂木芍藥，確卽牡丹，因爲古時無牡丹名稱，至後始有其名。今植物學家亦說草本者爲芍藥，木本者爲牡丹，是兩花實在相似的。

至唐宋時貴游推尙牡丹的情形，可閱當時人的載籍，以見其盛況的一斑。如唐李肇國史補云：

京城貴遊尙牡丹三十餘年矣。每春暮，車馬若狂，以不耽玩爲恥。執金吾鋪官園外寺觀種以求利，一本有直數萬元者。又如唐康駢劇談錄云：

京國花卉之辰，尤以牡丹爲上。至於佛宇道觀，遊覽者罕不經歷。慈恩浴室院有花兩叢，每開及五六百朵，繁艷芬馥，近少倫比。有僧思振常話會昌中朝士數人尋芳，遍詣僧室。時東廊院有白花可愛，相與傾酒而坐，因云牡丹之盛，蓋亦奇矣。然世之所玩者，但淺紅深紫而已，竟未識紅之深者。院主老僧微笑曰：「安得無之，但諸賢未見爾。」於是從而詰之，經宿不去。云：「上人向來之言，當是會有所覩，必希相引寓目，春遊之願足矣。」僧但云：「昔於他處一逢，蓋非罄數所見。」及旦，求之不已。僧方露言曰：「衆君子好尙如此，貧道又安得藏之？今欲同看此花，但未知不洩於人否？」朝士作禮而誓云：「終身不復言之。」僧乃自開一房，其間施設幡像，有板壁遮以舊幕。幕下啓門而入，至一院，有小堂兩間，頗甚華潔，軒窗欄檻，皆是柏材。有殷紅牡丹一窠，婆婆幾及千朵。初旭纔照，露華半晞，濃姿半開，炫耀心目。朝士驚賞留戀，及暮而去。僧曰：「予保惜栽培，近二十年矣。無端出語，使人見之，從今以往，未知何如耳。」信宿，有權要子弟與親友數人，同來入寺，至有花僧院，從容良久，引僧至曲江閑步。將出門，令小僕寄安茶笈，裹以黃帕，於曲江岸藉草而坐。忽有弟子奔走而來云：「有數十人入院掘花，禁

之不止。」僧俯首無言，唯自吁歎。坐中但相盼而笑。既而卻歸，至寺門，見以大畚盛花昇而去。取花者謂僧曰：「竊知貴院舊有名花，宅中咸欲一看，不敢預有相告，蓋恐難於見捨。適所寄籠子中，有金三十兩，蜀茶二斤，以爲酬贈。」

爲了一窺牡丹，竟至設計偷掘，亦可見當時人愛好之甚了。至如裴度至死猶欲一視，如唐李亢獨異志所云：

裴晉公度寢疾永樂里，暮春之月，忽過遊南園，令家僕僮舁至藥欄，語曰：「我不見此花而死，可悲也。」悵然而返，明早報牡丹一叢先發，公視之，三日乃薨。

尤屬奇聞。至宋時邵伯溫聞見前錄云：

洛中風俗尚名數，雖公卿家不敢事形勢人，隨貧富自樂，於貨利不急也。歲正月，梅已花，二月桃李雜花盛，三月牡丹開。於花盛處作園囿，四方伎藝舉集。都人士女載酒爭出，擇園亭勝地上下池台間，引滿歌呼，不復問其主人。抵暮遊花市，以筠籠賣花。雖貧者亦載花飲酒相樂。

簡直成爲一種令節了。歐陽修洛陽牡丹記亦云：

洛陽之俗大抵好花，春時城中無貴賤皆插花，雖負擔者亦然。花開時，士庶競爲遨遊，往往於古寺廢宅有池台處，爲市井張幄幕，笙歌之聲相聞。最盛於月陂堤，張家園，棠棣坊，長壽寺，東街與郭令宅，至花落乃罷。

則又儼如花市了。此外宋人品定牡丹種類實繁，如朱弁曲消舊聞云：「歐公作花品，目所經見者纔二十四種，後於錢思公屏上得牡丹凡九十餘種。至張珣撰譜三卷，凡一百一十九品。大觀政和以後，花之變態又有在珣所譜之外者。」此猶指宋時而言的，已達一百餘種。至明薛鳳翔作亳州牡丹表，則竟達二百六十九種。